सत्यान्वेषी ब्योमकेश बक्शी

कमरा नम्बर- २

शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय

अनुवादक

जयदीप शेखर

कमरा नम्बर- 2

सत्यान्वेषी ब्योमकेश बक्शी की बँगला जासूसी कहानी
'रूम नॅम्बर दुई' (1964) का हिन्दी अनुवाद

लेखक
शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय

अनुवादक
जयदीप शेखर

जगप्रभा
JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit:
oikotaantees.in
(Image printed on Tshirt. Copied and converted to Negative for Cover.)

-: eBook :-

KAMARA NUMBER- 2

(Room No.- 2)

Hindi translation of the Bengali detective story 'Room Nombar Dui' (1964) from the 'Byomkesh Bakshi' series.

Original author: Sharadindu Banyopadhyay (1899-1970)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright © 2023: Translator
Available at: jagprabha.in

***

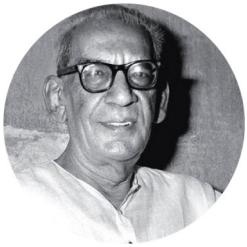

शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय

(1899 - 1970)

बँगला साहित्य में जासूसी कहानियों को सम्मानजनक स्थान दिलाने वाले लेखक। इनके द्वारा गढ़े गये चरित्र ब्योमकेश बक्शी के नाम से शायद ही कोई अपरिचित हो। ब्योमकेश खुद को 'जासूस' नहीं, 'सत्यान्वेषी' कहते थे। वे अपनी आँखों से महीन पर्यवेक्षण तथा दिमाग से गहन विश्लेषण करके जटिल से जटिल मामलों की तह तक पहुँच जाते थे।

शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय ने यूँ तो बँगला में काफी कुछ लिखा है, कई किरदार गढ़े हैं, वे फिल्मों में पटकथा लेखक भी रहे हैं, पर वे ब्योमकेश बक्शी के प्रणेता के रूप में ही जाने जाते हैं। उन्होंने ब्योमकेश बक्शी की कुल 32 कहानियाँ (33वीं कहानी अधूरी है) लिखी हैं, जिनमें से ज्यादातर पर फिल्में या टीवी धारावाहिक बन चुके हैं। 1932 से 1936 तक उन्होंने ब्योमकेश की 10 कहानियाँ लिखीं, इसके बाद वे फिल्मों में व्यस्त रहे, फिर 1951 से 1970 के बीच बाकी कहानियाँ लिखीं।

***

कमरा नम्बर- 2

निरुपमा होटल के मैनेजर हरिश्चन्द्र होड़ ने नीन्द से जागते ही घड़ी देखी- साढ़े छह। वे हड़बड़ाकर बिस्तर पर उठ बैठे। ओह, बहुत देर हो गयी आज तो। उन्होंने पुकारा, "गुणधर!"

तमगा-वर्दी पहना प्रधान खानसामा गुणधर आकर खड़ा हुआ। छरहरा, अत्यन्त कर्मकुशल, चौकस व्यक्ति- होटल की छोटी-से-छोटी बात पर भी नजर रहती थी उसकी। हरिश्चन्द्र ने उससे पूछा, "बेड-टी दे दिया गया?"

गुणधर बोला, "जी हाँ। तिमंजिले पर सभी ने चाय ली, केवल दुमंजिले पर दो नम्बर कमरे में दस्तक देकर भी कोई जवाब नहीं मिला।"

हरिश्चन्द्र बोले, "दुमंजिले का दो नम्बर– राजकुमारबाबू। पन्द्रह मिनट बाद फिर दस्तक देना। –बाजार कौन गया है?"

"जेनरल को लेकर सरकार जी गये हैं।

"ठीक है। मेरी चाय ले आओ।" हरिश्चन्द्र उठकर संलग्न बाथरूम में चले गये।

रासबिहारी एवेन्यु और गड़ियाहाट के चौराहे से थोड़ी ही दूरी पर निरुपमा होटल था। देशी होटल होने पर भी भाव-भंगिमा कुछ विलायती किस्म की थी। नौकर खानसामा की तरह तकमा-वर्दी पहनते थे, मुख्य प्रवेशद्वार पर जेनरल-जैसी पोशाक पहनकर दरबान खड़ा रहता था, जो योग्य व्यक्तियों को सलाम किया करता था। तिमंजिले भवन के प्रत्येक मंजिल पर आठ-आठ कमरे थे। नीचे की मंजिल पर मैनेजर के दो कमरे, उनका आवास एवं ऑफिस, टेबल-कुर्सियों से सजा एक डायनिंग रूम, रसोईघर, बावर्चीखाना, नौकरों के का कमरा, स्टोर रूम इत्यादि थे। होटल में देशी व विदेशी दोनों प्रकार के भोजन उपलब्ध थे- जैसी इच्छा, वैसा भोजन किया जा सकता था। होटल में ठहरने किराया विदेशी होटलों के मुकाबले कम था, लेकिन साधारण देशी होटल से ज्यादा था। छोटा होटल था, अतः ज्यादातर समय भरा रहता था, उच्च-मध्यवित्त श्रेणी के अतिथि यहाँ ठहरते थे।

आधे घण्टे बाद हरिश्चन्द्र बाथरूम से विलायती पोशाक पहनकर निकले। दोहरा शरीर था, इसलिए कोट-पैण्ट उन पर फबता था; उम्र अन्दाजन पैंतालीस, आँखों में अनुभव एवं दुनियादारी की झलक।

टेबल पर चाय और सुबह का नाश्ता रखकर गुणधर खड़ा था, हरिश्चन्द्र नाश्ता करने बैठे। चाय, टोस्ट, मक्खन और दो आधे उबले अण्डे। खाते समय हरिश्चन्द्र बात नहीं करते थे। पाँच मिनट के अन्दर नाश्ता समाप्त कर मुँह पोंछते-पोंछते बोले, "राजकुमारबाबू की खबर फिर लिये थे?"

गुणधर बोला, "जी हाँ, इस बार भी कोई उत्तर नहीं मिला।"

हरिश्चन्द्र ने भौंहें सिकोड़ी। फिर उठकर दफ्तर वाले कमरे में गये। दराज से चाबियों का गुच्छा निकालकर जेब में डाल लिया, "चलो, देखते हैं।"

फाल्गुन महीना होने पर भी सात बजे दिन चढ़ आया था; नल के नीचे, रसोई में, डायनिंग रूम में नौकर-नौकरानियाँ तत्परता के साथ काम में जुटी थीं। आठ बजे अतिथियों को ब्रेकफास्ट देना होगा।

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए हरिश्चन्द्र ने पीछे आ रहे गुणधर से पूछा, "कल रात राजकुमारबाबू कमरे में ही थे तो?"

गुणधर बोला, "जी हाँ, थे। रात पौने नौ बजे मैं खुद ही उनके लिए डिनर लेकर आया था।"

"रात में सदर दरवाजा कब बन्द हुआ था?"

"आप लौटे थे ग्यारह बजे, उसके बाद मैंने सदर दरवाजा बन्द किया।"

दुमंजिले पर एक कतार में आठ कमरे थे, सामने लम्बा बरामदा। सीढ़ी के मुहाने से ही कमरों का नम्बर शुरू हुआ था। सभी दरवाजे सटाये हुए थे। हरिश्चन्द्र ने दो नम्बर कमरे के सामने खड़े होकर जरा जोर से दस्तक दी।

कोई उत्तर नहीं मिला।

तब हरिश्चन्द्र ने आवाज दी, "राजकुमारबाबू!"

इस बार भी उत्तर नहीं मिला।

हरिश्चन्द्र ने और भी ऊँची आवाज में पुकारा, "राजकुमारबाबू!"

फिर भी उत्तर नहीं।

हरिश्चन्द्र ने तब दरवाजे का हैण्डल घुमाया, लेकिन हैण्डल नहीं घूमा। दरवाजे पर ई-एल ताला लगा हुआ था, चाबी नहीं घुमाने से बाहर से दरवाजा नहीं खुलेगा।

हरिश्चन्द्र ने जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला।

इसी समय दो नम्बर कमरे के दोनों तरफ के दरवाजों को खोलकर दो सिरों ने बाहर झाँका। एक नम्बर से जिन्होंने झाँका, वे एक उम्रदराज महिला थीं। उन्होंने पूछा, "क्या हुआ?" तीन नम्बर कमरे से सिर निकाला था एक अधेड़ पुरूष ने; वे बोले, "मैनेजरबाबू, मुझे बुखार आ गया है, जल्दी से एक डाक्टर भेजवा दीजिए।"

महिला बाहर निकल आयीं, बोलीं, "मैं डाक्टर हूँ।" वे हरिश्चन्द्र के बगल से तीन नम्बर कमरे के सामने गयीं। तीन नम्बर के अतिथि शचीतोष सान्याल ने अपनी लाल आँखें फैलाकर एक बार डाक्टर के चेहरे की तरफ देखा, फिर दरवाजे से हटते हुए बोले, "आईए।"

हरिश्चन्द्र ने गुच्छे में से चाबी चुनकर ताले में डाला, दरवाजे को जरा-सा खोलकर अन्दर झाँका, कुछ पल स्थिर खड़े रहे, फिर दरवाजे को खींचकर उन्होंने बन्द कर दिया।

बरामदे पर कोई नहीं था। इधर-उधर देखकर नीची आवाज में वे गुणधर से बोले, "गुणधर, तुम यहीं रहो, कहीं मत जाना। मैं अभी आ रहा हूँ।" उनका स्वर दबी हुई उत्तेजना के कारण सीत्कार-जैसा था।

वे दबे पाँव नीचे उतर गये।

तीन नम्बर कमरे में महिला डाक्टर शोभना राय ने मरीज शचीतोष सान्याल को बिस्तर पर लिटाकर उनका टेम्पेरेचर लिया, नाड़ी जाँचा, जीभ की परीक्षा की। इसके बाद बोलीं, "कुछ नहीं है, मामूली ठण्ड लग गयी है। ऐस्पिरीन की दो गोली खाकर लेटे रहिए।"

शचीतोष ने पूछा, "बुखार कितना है?"

"नाईण्टी-नाईन।"

"शरीर में बहुत दर्द है।"

"वो कुछ नहीं है। मौसम बदलते समय अचानक ठण्ड लग जाती है। मैं ऐस्पिरीन की गोलियाँ भेजवा देती हूँ।"

"आपकी फी कितनी है?"

"फी नहीं देनी होगी।"

तीन नम्बर से निकलकर शोभना राय ने देखा, गुणधर दो नम्बर के बाहर खड़ा था। उन्होंने पूछा, "इस कमरे में क्या हुआ है?"

गुणधर ने सिर्फ सिर हिलाया। शोभना राय और कोई प्रश्न किये बिना अपने कमरे में चली गयीं।

नीचे हरिश्चन्द्र उस वक्त अपने ऑफिस वाले कमरे से पुलिस को फोन कर रहे थे, "जल्दी आईए, हत्या हो गयी है– !"

बीती रात इंस्पेक्टर राखाल सरकार के घर सत्यान्वेषी ब्योमकेश आमंत्रित थे। सरकार महाशय दक्षिण कोलकाता के एक थाने के अधिकारी थानेदार थे। ब्योमकेश लोगों ने जब केयातला में जमीन खरीदकर मकान बनवाना शुरू किया था, तब उनके साथ परिचय हुआ था; परिचय क्रमशः बन्धुत्व में परिणत हुआ। सरकार महाशय पुलिस में होने के बावजूद बहुत ही मिलनसार और सहृदय व्यक्ति थे; उम्र में ब्योमकेश से कुछ छोटे थे, इसलिए बन्धुत्व के साथ बहुत हद तक लिहाज मिला हुआ था।

ब्योमकेश के साथ अजीत भी आया था निमंत्रण खाने। गपशप चली बहुत रात तक। रात गहरा गयी, लेकिन गप खत्म नहीं हुई। खाने-पीने के बाद अजीत को उठने की कोशिश करते देख राखालबाबू बोले, "ब्योमकेश'दा, आप आज रात यहीं रह जाईए न। कल सुबह एक ही बार मकान के काम का जायजा लेकर घर लौट जाईएगा।"

ब्योमकेश बोले, "बात ठीक ही है। अजीत, तुम आज लौट जाओ, मैं कल काम-काज देखकर लौटूँगा।"

अजीत चला गया। कोलकाता शहर में इस पाड़ा से उस पाड़ा जाना विदेश-यात्रा के समान था।

अगले दिन सुबह पौने आठ बजे ब्योमकेश चाय-नाश्ता कर निकलने का उपक्रम कर रहा था कि उसी समय टेलीफोन की घण्टी बज उठी। राखालबाबू ने फोन लेकर कुछ देर तक गौर से सुना, दो-एक जवाब दिया, इसके बाद फोन रखकर ब्योमकेश से बोले, "थाना से फोन था। हमारे इलाके के एक होटल में हत्या हो गयी है। रहस्यमयी मामला जान पड़ रहा है। आप चलिएगा मेरे साथ?"